प्रश्न: केमोश कौन था, और उससे हमें आज कौन-सा आत्मिक पाठ मिलता है?

उत्तर:

आइए पहले परमेश्वर के वचन को देखें:

यिर्मयाह 48:46 (NHT)

“हाय तेरा सत्यानाश, हे मोआब! केमोश का दल नाश कर दिया गया; क्योंकि तेरे बेटे बन्दी बनाकर ले जाए गए और तेरी बेटियाँ भी बंधुआ बनाकर ले जाई गई हैं।”

यह पद स्पष्ट बताता है कि केमोश कोई मनुष्य नहीं, बल्कि मोआबियों का एक मूर्तिदेवता था। पुराने समय में लगभग हर राष्ट्र का अपना एक “राष्ट्रीय देवता” होता था, जिसे वे अपने देश और लोगों का रक्षक मानते थे।

उदाहरण के लिए:

इस्राएल—एकमात्र सच्चे परमेश्वर याहवे (यहोवा) की उपासना

करता था (उत्पत्ति 1:1; निर्गमन 3:14)।

सोर—बाल की उपासना करता था।

सैदा—अश्तोरेत की।

अम्मोन—मिल्कोम/मोलेक की।

मोआब—केमोश की।

ये केवल परम्परागत चिन्ह नहीं थे—लोग इन्हें सचमुच अपने देवता मानते थे। लेकिन वास्तव में ये “देवता” दुष्टात्माएँ थीं, जो देवत्व का ढोंग करती थीं। यही बात पौलुस भी सिखाता है:

1 कुरिन्थियों 10:20 (NHT)

“…वे जो कुछ बलिदान चढ़ाते हैं, वह परमेश्वर के लिये नहीं, बल्कि दुष्टात्माओं के लिये चढ़ाते हैं…”

पुराने नियम में भी यही सत्य प्रकट होता है:

व्यवस्थाविवरण 32:17 (NHT)

“उन्होंने दुष्टात्माओं के लिये बलिदान चढ़ाया, न कि परमेश्वर के लिये…”

परमेश्वर ने इस्राएल को स्पष्ट आज्ञा दी थी:

निर्गमन 20:3–5 (NHT)

“तू मेरे सामने दूसरों को देवता करके न मानना… न तुम उन्हें दण्डवत करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं, तेरा
परमेश्वर यहोवा, जलन रखने वाला ईश्वर हूँ…”

फिर भी कई इस्राएली—यहाँ तक कि कुछ राजा—मूर्तिपूजा में गिर गए। सबसे दुखद उदाहरण है राजा सुलैमान, जिसने अपने जीवन के अन्त में अपनी विदेशी पत्नियों के प्रभाव में आकर मूर्तियों को माना:

1 राजा 11:7 (NHT)

“तब सुलैमान ने यरूशलेम के सामने वाले पहाड़ पर मोआबियों के घृणित देवता केमोश के लिये भी ऊँचा स्थान बनाया…”

हालाँकि बाद में उसने पश्चाताप किया, पर उसका किया हुआ समझौता इस्राएल में पीढ़ियों तक विनाश का कारण बना।

बाद में राजा योशियाह ने बड़े जोरों से सुधार करते हुए इन मूर्तियों के ऊँचे स्थानों को तोड़ दिया:

2 राजा 23:13 (NHT)

“…जो आश्तोरेत, केमोश और मिल्कोम के लिये बनाए गए थे, राजा
ने उन्हें अशुद्ध किया।”

आज हम इससे क्या सीखते हैं?

आज भले ही केमोश जैसे नाम न सुने जाएँ, पर मूर्तिपूजा आज भी

मौजूद है—बस उसका रूप बदल गया है।
कई संस्कृतियों में, खासकर अफ्रीका और अन्य परम्परागत समाजों में, कुछ धार्मिक रीति-रिवाज़ पुराने नियम की मूर्तिपूजा से बहुत मेल खाते हैं:

मूर्तियों या मूर्तिरूपी वस्तुओं की पूजा,

पूर्वजों या आत्माओं को चढ़ावे चढ़ाना,

बलिदान या पेय-बलि अर्पित करना,

किसी वस्तु या स्थान के सामने झुकना।

कई जगह ये प्रथाएँ ईसाई विश्वास के साथ मिलकर एक मिश्रित (syncretic) धर्म बना देती हैं, जो आत्मिक रूप से खतरनाक है। बाइबल सिखाती है कि सच्ची उपासना केवल पिता की ओर, केवल यीशु मसीह के माध्यम से होनी चाहिए (यूहन्ना 14:6; यूहन्ना 4:24)।

□□□□□□□ 4:24 (NHT)

> “□□□□□□□□ □□□□□ □□; □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□□
> □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□”

1 □□□□□□□ 5:21 (NHT)

> “□□ □□□□□□, □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□”

□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□:

- □□□□□ 21:29 — “□□□! □□ □□□□, □□ □□□ □□□□ □□□! □□ □□□□□ □□ □□□□□...”

- □□□□□□□□□ 11:24 — □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□

1 राजा 11:7 — सुलैमान ने केमोश के लिये ऊँचा स्थान बनाया।

1 राजा 11:33 — परमेश्वर सुलैमान की मूर्तिपूजा के कारण उसके विरुद्ध बोलता है।

यिर्मयाह 48:7, 13 — मोआब और उसके झूठे देवता केमोश पर न्याय की घोषणा।

निष्कर्ष

केमोश की कहानी केवल इतिहास नहीं है। यह याद दिलाती है कि:

मूर्तिपूजा चाहे खुले रूप में हो या छिपे रूप में,

चाहे वह कोई परम्परा हो, संस्कृति हो, वस्तु हो, पैसा हो या प्रसिद्धि—
यदि वह जीवन में परमेश्वर की जगह लेने लगे, तो वह मूर्ति बन जाती है।

इसलिए, आइए हम अपने जीवन को फिर से परमेश्वर के प्रति शुद्ध, सच्ची और एकनिष्ठ उपासना में समर्पित करें—उसके वचन और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में।

“हे प्रभु यीशु, आ।” — प्रकाशितवाक्य 22:20 (NHT)

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp